सिक्ख गुरुद्वारों में भित्ति चित्रकला का विश्लेषण सन्दर्भः गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी, अमृतसर

प्राप्तिः 29.08.2025
स्वीकृतः 15.09.2025

72

गुरदीप कौर
शोधार्थी (ड्राईंग एण्ड पेंटिंग विभाग)
दयालबाग एजूकेशन इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टू बी यूनीवर्सिटी) दयालबाग, आगरा
ईमेलः *gurdeep321kaur@gmail.com*

डॉ0 सोनिका
असिस्टेंट प्रोफेसर (ड्राईंग एण्ड पेंटिंग विभाग)
दयालबाग एजूकेशन इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टू बी यूनीवर्सिटी) दयालबाग, आगरा
ईमेलः *sonikasandhu@dei.ac.in*

सारांश

भारतीय भित्ति चित्रण की धार्मिक परम्परा ऐतिहासिक एवं प्राचीन है। प्राचीन भारतीय भित्ति चित्रकला का उत्कृष्ट उदाहरण हमें अजंता, एलोरा, बाघ आदि गुफाओं में मिलता है। यह भित्ति चित्रण धार्मिक संस्कृति व परम्परागत कला से सम्बन्धित है, जो भारतीय धार्मिक परम्परा, संस्कृति व विश्वास आदि का अद्‌भुत समन्वय प्रस्तुत करती हैं। कहीं न कहीं इस कला ने धर्म को सहयोग दिया और धार्मिक संस्कृति, धार्मिक परम्परायें व धार्मिक विश्वास को कला के द्वारा सहेजने व संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। धर्म का यह रूप धार्मिक इमारतों जैसे– मन्दिर, गिरजाघर, गुरुद्वारों में भित्ति चित्रों के रूप में सहभागी रहा है और यह चित्र आज भी मन्दिरों, गुरुद्वारों और अन्य धार्मिक स्थलों इत्यादि में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर संरक्षित हैं। इसी का समन्वित रूप अमृतसर स्थित 'गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी', एक आश्चर्यजनक संरचना में प्रस्तुत है। यह अमृतसर में श्री हरमंदिर साहिब के दक्षिण में स्थित है और यह अमृतसर की सबसे ऊँची मीनार है। यह मीनार सिक्खों के छठवें गुरु हरगोबिन्द जी के पुत्र बाबा अटल राय जी की समाधि थी, जो समय के अनुकूल एक गुरूद्वारे में बदल गई। इसी सन्दर्भ में 'गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी' की अद्‌भुत भित्ति चित्रकला को शोध पत्र का मौलिक विषय बनाया गया है, जिसकी विलक्षण चित्रकला का अध्ययन शोध पत्र के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य बिन्दु

भित्ति चित्रकला, मंदिर, गिरजाघर, गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी, परम्परा ऐतिहासिक, धार्मिक, संस्कृति।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.72

प्रस्तावना

कला एवं सांस्कृतिक परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन परम्पराओं में से एक है। भारतीय चित्रकला ने प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं कलाओं के माध्यम से सम्पूर्ण जगत को समय–समय पर मार्ग दिखाने का कार्य किया है। जिसमें भारतीय चित्रों के प्राचीन इतिहास का लेखा–जोखा मानव सभ्यता के इतिहास के समकक्ष शैलाश्रय चित्रों से प्रारम्भ होता है। भारतीय चित्रकला का उज्जवल इतिहास भित्ति चित्रों से ही आरम्भ हुआ है। प्रागैतिहासिक काल में आदिमानव ने सर्वप्रथम अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए या आनन्द की प्राप्ति के लिए जिस साधन का प्रयोग किया, वह भित्ति चित्रकला थी। इन गुफाओं की भित्तियों पर गेरू व कोयले के द्वारा चित्रों का अंकन किया गया। गुफाओं के चित्रों का अंकन करने के लिए खनिज रंगो जैसे– गेरू, रामरज, कोयला आदि का प्रयोग किया गया है।

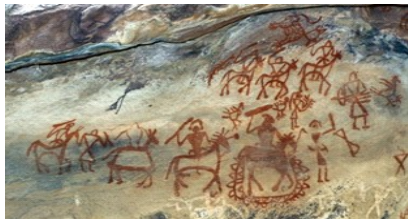

चित्र संख्या 1 – 'शिकार', भीमबेटका

Source- https://smarthistory.org/wp-content/uploads/2022/08/Bhimbetka_war_scene-1-870x577.jpg

विश्व की चित्रकला में भारतीय चित्रकला अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय कला में भित्ति चित्रकला का परम्परागत रूप हमें जोगीमारा, अजंता, बाघ, बादामी, एलोरा व एलीफेंटा आदि गुफाओं में दृष्टिगत होता है। चित्रकला का स्वर्णिम रूप हमें अजंता के चित्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है अर्थात् अजंता की चित्रकला में आतंरिक अभिव्यक्ति का सशक्त एवं सौन्दर्यात्मक रूप देखने को मिलता है। गुप्त काल के समय से अजंता की परम्परा में बौद्ध धर्म सम्बन्धित अनेकों गुफाओं का सृजन हुआ। इसके बाद शीघ्र ही अजंता के अनुकरण पर गुफाओं में भित्ति चित्र बनाए गये। इस गुफा में चित्रकला, मूर्तिकला व स्थापत्य तीनों कलाओं का सुन्दर समन्वय परिलक्षित है। यहाँ के चित्रकारों ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए छेनी– हथौड़े, रंगों और रेखाओं के माध्यम अपने भावानुभवों को दर्शाते हुए अपनी कलात्मकता को प्रकट किया। जब ये बौद्ध–भिक्षुक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए भारत से बाहर जाते थे, तो अपने साथ विभिन्न प्रकार के चित्रपट लेकर जाते थे, जिनमें बौद्ध धर्म से सम्बन्धित चित्र हुआ करते थे। जिन्हें देखकर जन–सामान्य धार्मिक आदर्शो को शीघ्रता से अपना लेते थे।

भारत में जब विदेशी आक्रमण का प्रभाव बढ़ा तो अजंता जैसी समृद्ध चित्र शैली के भित्ति चित्रों को बचाना असंभव सा प्रतीत होने लगा। अजंता चित्रशैली के पश्चात् बदलती हुई परिस्थितियों के कारण पोथी चित्र और लघुचित्र के रूप में कला की परम्परा को आगे बढ़ाया गया जिसके फलस्वरूप पाल, गुजरात, अपभ्रंश, राजस्थान, मुगल और पहाड़ी आदि शैलियों का विकास हुआ। इन शैलियों के माध्यम से ही धार्मिक विश्वासों को संजोने की परम्परा चलती रही । इस लघु चित्र शैली के युग में भागवत पुराण, पौराणिक गाथाओं और विभिन्न धार्मिक कथाएं हैं, उन्हें भी धार्मिक विषय के रूप में चित्रित किया गया, जहाँ जैन धर्म, बौद्ध धर्म एवं हिन्दू धर्म (कृष्णलीला) आदि से

सम्बन्धित चित्र बनाए गये हैं। कहीं न कहीं इस कला ने धर्म को सहयोग दिया और धार्मिक संस्कृति, परम्परायें व विश्वास को कला के द्वारा सहेजने व संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। धर्म का यह रूप स्थापत्य कला जैसे धार्मिक इमारतों – मन्दिर, गिरजाघर, गुरुद्वारों में भित्ति चित्रों के रूप में सहभागी रहा है और यह चित्र आज भी मन्दिरों, गुरुद्वारों और अन्य धार्मिक स्थलों इत्यादि में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर संरक्षित हैं।

चित्र संख्या 2 – पोथी माला, गुरू हरसहाय, पंजाब

Source- https://picryl.com/media/fresco-artwork-from-pothi-mala-guru-harsahai-punjab-78-d13382?zoom=true

इन भित्ति चित्रों से प्रभावित होकर भारत में कई मन्दिरों, गुरुद्वारों और धार्मिक स्थलों पर कई कलाकारों ने अपनी कल्पना से दीवारों पर चित्रों को अंकित किया और समाज, संस्कृति व मानवीय अनुभूतियों को कला के द्वारा दर्शाया गया। गुरुद्वारों में इस प्रकार की भित्ति चित्रकला परम्परा प्रचलित हुई और इस भित्ति चित्रकला के द्वारा धार्मिक दृष्टांतों को संरक्षित व संजोने में सहयोग मिला है। गुरुद्वारों में भित्तिचित्रों द्वारा सिक्ख धर्म की शिक्षाओं व सिक्ख गुरुओं की कही हुई बातों को जन–सामान्य तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। इसका समन्वित रूप अमृतसर स्थित 'गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी', एक आश्चर्य जनक संरचना में प्रस्तुत है।

उद्देश्य – 'सिक्ख गुरुद्वारों में भित्ति चित्रकला का विश्लेषण सन्दर्भः 'गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी, अमृतसर' के अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य है–

- धार्मिक प्रचार–प्रसार में चित्रकला के स्वरूप की व्याख्या करना।
- गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी, अमृतसर के भित्ति चित्रों के स्वरुप और महत्व पर प्रकाश डालना।
- भित्ति चित्रों के विषय, माध्यम, शैली व तकनीक का विश्लेषण करना।
- भित्ति चित्रों के कलात्मक सौन्दर्य का अध्ययन करना।

पंजाब और सिक्ख चित्रकला

भारत में दीवारों पर की गई चित्रकारी की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। पंजाब के भित्ति चित्र, भारत में बने भित्ति चित्रों के अनुरूप सदियों पुरानी परम्पराओं के अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करते है। 18वीं शताब्दी के अंत से 19वीं शताब्दी के आरम्भ में पंजाब की चित्रकला का उदय एवं विकास हुआ और अत्यन्त कम समय में इस कला ने अपनी एक मूल पहचान प्राप्त की। सन् 1802–1839 ईसवी में सिक्ख शासक महाराजा रणजीत सिंह के समय पंजाब में परिवर्तन की एक लहर आ गई थी। सिक्ख धर्म को इस अवधि के अन्तराल में शाही संरक्षण प्राप्त हुआ और धार्मिक

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.72

स्थलों की भव्यता, वैभव एवं ऐश्वर्य के लिए सिक्खों ने स्वयं को समर्पित किया। इस समय सिक्ख महाराजा रणजीत सिंह ने कांगड़ा के अन्तिम शासक को हराया और पंजाब की पहाड़ियों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विद्यमान सामान्य कलात्मक आन्दोलन पहली तीन शताब्दियों में विकसित हो रहा था। इस समय की पंजाब की चित्रकला को कलात्मक अभिव्यक्ति के पूर्ण विकसित रूप का अन्तिम चरण कहा जा सकता है। पंजाब के मैदानी इलाकों लाहौर, पटियाला, होशियारपुर और अमृतसर आदि में अनेक चित्रों का निर्माण हुआ, जिनमें निश्चित रूप से पहाड़ी चित्रकला के अवशेष प्राप्त होते हैं। महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल के समय में भारत में कला की तीन प्रमुख शाखाएं प्रचलित थीं, जिसमें मुगल कला, राजपूताना कला और कांगड़ा कला सम्मिलित थीं। इनके समय से ही कला को व्यापक रूप से बढ़ावा मिला जिस कारण पंजाब में सिक्ख दरबारी कला को स्वर्णिम युग के रूप में जाना जाता है। इन्होंने कांगड़ा जिले पर विजय प्राप्त की और कांगड़ा शैली के महत्वपूर्ण केन्द्रों को अपने अधीन कर लिया।

महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल के समय पहाड़ी कलाकारों को आत्मनिर्भर वातावरण ने आकर्षित किया। इस समय में लाहौर तथा अमृतसर से आए चित्रों को शाही संरक्षण प्राप्त हुआ। यह दोनों नगर कला गतिविधियों के केन्द्र बन गए। पहाड़ी राजपूत क्षेत्र कोटा और गुलेर सिक्ख शासन के अधीन थे। जिसके कारण सिक्ख शासन और पहाड़ी चित्रकारों का मेलजोल हुआ, इसके परिणाम स्वरुप सिक्ख धर्म में कला का एक नया रूप उभर कर सामने आया। **आर्चर के अनुसार (1966),** "19वीं शताब्दी की पहली तिमाही में अलंकरण का एक लोकप्रिय तरीका बन गया और सिक्खों के शासन के दौरान फला–फूला।" पहाड़ी कलाकारों के भित्ति चित्र सिक्ख चित्रकारों की तुलना में कहीं बेहतर थे, जिन्होंने बाद में इस पेशे (व्यवसाय) को अपनाया। इस प्रकार के कार्यों को बाद में सिक्ख चित्रकला शैली के रूप में जाना जाने लगा। सिक्ख चित्रकारों ने कांगड़ा चित्रकारों की भाँति आकृतियों को तीन– चौथाई आकृति रूपों में चित्रित करने की पुरानी प्रथा जारी रखी। सिक्ख गुरुओं के चित्र दीवारों और कागज दोनों पर चित्रित किए जाने लगे। स्वर्ण मंदिर अमृतसर, गुरुद्वारा पोथी माला फिरोजपुर, अकाल तख्त अमृतसर, बाबा अटल राय साहिब अमृतसर, गुरुद्वारा लोहगढ़ साहिब फरीदकोट, गुरुद्वारा बाबा वीर सिंह अमृतसर, गुरुद्वारा गोइंदवाल बहोली साहिब, तरनतारन सिख भित्ति चित्रों को प्रदर्षित करने वाली प्रमुख इमारतें हैं।

चित्र संख्या 3 – गुरुद्वारा गोइंदवाल बहोली साहिब, तरनतारन

Source- https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/thumb/2/2d/Fresco_of_Guru_Hargobind_from_above_the_entrance_of_the_Baoli_Sahib_located_in_Goindwal.jpg/767px-

महाराजा रणजीत सिंह ने फैजाबाद के मुस्लिम मोहराकाशों (कलाकारों) के द्वारा अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की दीवारों को चित्रकला द्वारा सुशोभित करवाया, जो सिक्ख भित्ति चित्रों का एक अद्भुत नमूना बन गया। अमृतसर के भित्ति चित्र विशेष रूप से जटिल रचनाओं में अंकित है। इन भित्ति चित्रों की रचना बिना किसी सृजनात्मक भाव के चित्रित की गई थी। यहाँ के कुछ विशिष्ट गुण स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हैं और यही गुण अमृतसर के गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब में बाद के भित्ति चित्रों में अनुपस्थित हैं।

पंजाब में दीवार पर की गई चित्रण की फ्रेस्को प्रक्रिया को 'मोहराकाशी' कहा जाता है और इसे 'जोधपुरी हुनर' के नाम से भी जाना जाता है। सिक्ख कला शैली की एक शाखा भित्ति चित्रकला है जिसे "मोहराकाशी" के नाम से जाना जाता है। मोहराकाशी (भित्ति चित्रकला) का प्रारम्भ भाई केहर सिंह नक्काश ने अमृतसर क्षेत्र में किया था। गुरुद्वारों में भित्तिचित्रों द्वारा सिक्ख धर्म की शिक्षाओं व सिक्ख गुरुओं की कही हुई बातों को जन–सामान्य तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। इसका समन्वित रूप अमृतसर स्थित 'गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी' में दृष्टिगत है।

गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी

अमृतसर के पवित्र स्थान स्वर्ण मंदिर के पास एक प्रसिद्ध गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी स्थित है और इस गुरुद्वारे की भित्तियों पर पुरातन चित्रों के अद्भुत नमूने देखने को मिलते हैं। गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी, अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के निकट दक्षिण में स्थित है, जो अमृतसर की सबसे ऊँची मीनार है। यह इमारत स्वर्ण मन्दिर से लगभग 185 मीटर की दूरी पर है और 130 फीट ऊँची है। यह गुरुद्वारा सिक्खों के छठवें गुरु हरगोविंद जी के सुपुत्र बाबा अटल राय साहिब जी की याद में सुशोभित है। इससे पूर्व यह समाधि थी, जो समय के अनुकूल एक गुरुद्वारे में परिवर्तित हो गई। बाबा अटल राय साहिब जी का जन्म गुरुद्वारा गुरु के महल श्री अमृतसर में संवत् 1676 (सन् 1619 ईसवी) में हुआ। बाल्यावस्था में आप जो वचन कहते वह पूर्ण हो जाता, इस प्रभाव के कारण ही साहिब अटल राय जी को सभी बाबा अटल राय साहिब जी पुकारने लगे। इनकी मृत्यु 9 वर्ष की आयु में हो गई थी जिनकी स्मृति में यह गुरुद्वारा नौ मंजिला अष्टकोणीय मीनार के रूप में बनाया गया। प्रत्येक मंजिल अटल राय साहिब जी के एक वर्ष का प्रतिनिधित्व करती है, यही कारण है कि यह गुरुद्वारा 9 मंजिला बनाया गया है। इसकी नींव सिक्खों ने संवत् 1835 में रखी इसके पश्चात् सरदार जोध सिंह रामगढ़िया ने संवत् 1841 में कुछ मंजिलें बनवाई थी।

चित्र संख्या 4 – गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी, अमृतसर

Source- https://i.pinimg.com/736x/73/7e/75/737e75d0cc0231b23c496099738809a9.jpg

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.72

ऐसा माना जाता है कि 1600 के दशक में यहाँ एक स्मारक स्थित था, जिसे अब्दाली ने नष्ट कर दिया था। इसके पश्चात् सिक्ख सरदारों ने मिलकर सन् 1750 ईसवी में एक तीन मंजिला इमारत बनवाई थी। ज्ञानी ज्ञान सिंह का कथन है कि नौ मंजिला इमारत का निर्माण सन् 1821 ईसवी में महाराजा रणजीत सिंह ने करवाया वरन् शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) के रिकॉर्ड के अनुसार इसकी नींव सन् 1778 ईसवी में रखी गई और सन् 1784 ईसवी में यह मीनार बनकर तैयार हो गई।

कहा जाता है बाबा अटल राय जी अपने साथियों के साथ प्रतिदिन खिदो–खूडी (हॉकी की तरह का खेल) खेला करते थे। एक दिन वह अपने साथियों के साथ खेल रहे थे इस दौरान उनके दोस्त मोहन की बारी आई, परन्तु संध्या होने के कारण मोहन खेल ना सका इसलिए मोहन को दूसरे दिन पारी देने का वादा किया, उसी रात मोहन को एक सांप ने डस लिया और उसकी मृत्यु हो गई। अगली सुबह सभी मैदान में खेलने के लिए एकत्रित हुए परन्तु मोहन नहीं आया। बाबा अटल राय जी ने मोहन के बारे में पूछा, वह अभी तक क्यों नहीं आया। जब बाबा अटल राय जी को मोहन के बारे में पता लगा तो वह उनके घर पहुँचे। उन्होंने देखा कि मोहन के माता–पिता विलाप कर रहे थे, तब विचलित माता–पिता ने अटल राय साहिब को मोहन की मृत्यु के बारे में बताया तब बाबा अटल राय बोले नहीं वह मर नहीं सकता, वह मरने का नाटक कर रहा है, वह मुझे मेरी खेल की बारी नहीं देना चाहता है, मैं उसे जगा दूँगा। यह कहकर वह कमरे में गए उन्होंने अपनी छड़ी मोहन के गर्दन में डालकर कहा – "मोहन उठो और 'सतनाम वाहेगुरु' कहो और अपनी आँखें खोलो"। यह सुनकर मोहन उठ गया मोहन के पुनर्जीवित होने की खबर आग की तरह फैल गई।

चित्र संख्या 5 – 'बाबा अटल राय साहिब जी अपने मित्रों के साथ खेलते हुए'

परन्तु जब गुरु हरगोबिंद साहिब जी को इस बात का पता लगा तो वह बिल्कुल भी खुश नहीं हुए, उन्होंने कहा– "हमें ईश्वर की इच्छा माननी चाहिए हमें उनके किए को बदलने की कोशिश नहीं करनी चाहिए"। जब बाबा अटल राय साहिब जी घर लौटे, गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने बाबा अटल राय साहिब जी से कहा 'भाणा उलटिया जे' अर्थात् तुमने ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध कार्य किया है। तत्पश्चात् बाबा अटल राय जी नमस्कार कर इस स्थान पर लेट गये और शरीर त्याग दिया। यह वृत्तांत (घटना) संवत् 1685 (सन् 1628 ईसवी) आश्विन वदी 10 के दिन हुआ। सिक्ख संगत सहित गुरु हरगोबिंद साहिब जी को ज्ञात होने पर वह इस पवित्र स्थान पर आये और अपने सुपुत्र बाबा अटल राय का इसी स्थान पर संस्कार किया। तत्पश्चात् सिक्ख संगत ने संस्कार के स्थान पर गुरुद्वारे की नींव संवत् 1835 (सन् 1778 ईसवी) में रखी गई। इस इमारत की विलक्षणता है कि यह श्री अमृतसर के भीतर नगर की सभी इमारतों से ऊँची ईमारत है।

भित्ति चित्र

इस गुरूद्वारे के भूतल एवं पहली मंजिल पर भित्ति चित्र बने हैं। पहली मंजिल पर सिक्खों के पहले गुरु नानक देव जी के जीवन काल, बाबा अटल राय साहिब जी, सिक्खों के शहीद वीर योद्धा, फूल–पत्तियों का अलंकरण, प्राकृतिक दृश्य एवं कई अन्य देवी–देवताओं आदि विषयों पर आधारित चित्र अंकित हैं। इन भित्तियों पर सुन्दर और अद्भुत चित्रकारी की गई है। यहाँ 40 से अधिक पैनल बने हैं और भित्ति चित्रों की लम्बी श्रृंखला है। इन भित्ति चित्रों में गुरुमुखी भाषा को भी अंकित किया गया है। मुख्य रूप से गुरु नानक देव जी के जनम साखी नामक साहित्य के बड़े संग्रह पर आधारित चित्रों को विस्तृत रूप से चित्रित किया गया है। ऐसा माना जाता है यह भित्ति चित्र 20वीं सदी में कलाकार जयमल सिंह, मेहताब सिंह, हुकम सिंह और आत्मा सिंह द्वारा बनाये गए। मुख्य रूप से नक्काश (कलाकार) मेहताब सिंह ने भित्ति चित्र चित्रित किए। ऐसा कहा जाता है नक्काश (कलाकार) मेहताब सिंह द्वारा चित्रित इन भित्ति चित्रों को इनके पुत्र प्रीतम सिंह ने पुनः चित्रित किया है। पहाड़ी शैली और राजस्थान शैली से प्रभावित होकर कलाकार जयमल सिंह, मेहताब सिंह, हरभजन सिंह और हुकम सिंह ने भित्ति चित्रण किया और आत्मा सिंह ने भित्तियों पर पुष्प अलंकरण का चित्रण किया।

चित्र संख्या 6 की रचना मेहताब सिंह ने की थी। इस चित्र को देखकर प्रतीत होता है अनेक देवी–देवता बालक गुरू नानक के दर्शन के लिए उत्सुक हैं। पिता मेहता कालू बालक गुरू नानक को गोद में लिए हुए हैं। अनन्त प्रकाश के दर्शन का आनन्द लेते हुए अनेक देवी–देवताओं को निरूपित किया गया है। देवी–देवता और अतिथिगण अनन्त प्रकाश के प्रति श्रद्धा भाव से नमन एवं झुकते हुए मन्त्रोच्चार कर रहे हैं–

''सतगुरू नानक परगटिया मिटि धुंध जग चानन होया''

चित्र संख्या 6 – 'बालक गुरू नानक के दर्शन'

कलाकार ने आकाश से अन्य देवताओं को फूल बरसाते हुए तथा संगीतकारों को पवित्र संगीत बजाते हुए चित्रित किया है। देवी–देवताओं को मुकुट पहने तथा आभूषणों से सजे हुए दर्शाया गया है। आकृतियों की लयात्मकता दर्शक के हृदय में आह्लाद उत्पन्न कर देती है। विषयवस्तु की जीवन्तता इस चित्र को प्रभावी बनाती है। प्रत्येक भाग को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। यह चित्र आध्यात्मिक है तथा इस चित्र को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि बालक गुरू नानक आध्यात्मिक संसार में प्रविष्ट कर रहे हैं।

चित्र संख्या 7 – 'श्री गुरू नानक का विवाह' नामक चित्र में श्री गुरू नानक देव जी की बारात के दृश्य को दर्शाया गया है। श्री गुरू नानक घोड़ी पर सवार हैं, हाथ में तलवार लिए हुए, पीले रंग की पोशाक पहने चित्रित हैं। गुरमुखी भाषा का प्रयोग करते हुए, चित्र में बताया गया है बहन

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.72

नानकी घोड़ी की लगाम थामे, हाथ में थाली पकड़े चने खिला रही है और अपने प्रिय भाई को शुभ विवाह के लिए आर्शीवाद दे रही है। यह दृश्य अत्यन्त उत्साह जनक है। चित्रकार ने आकृतियों को बोने आकार का तथा यथार्थ रूप से चित्रित किया है।

चित्र संख्या 7 – 'श्री गुरू नानक का विवाह'

चित्र संख्या 8 में गुरूद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी में बने चित्रों को अलंकरण द्वारा सुशोभित किया गया है। प्रत्येक मेहराब फूल–पत्तियों एवं पक्षियों के साथ अलकृंत है। हाशियों में बेल– बूटे और ज्यामितीय रेखांकन प्रदर्शित है। खम्भों पर भी फूल–पत्तियाँ अंकित हैं।

चित्र संख्या 8 – 'अलंकरण'

कलात्मक विशेषताएं

गुरूद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी, अमृतसर में चित्रित किये गए भित्ति चित्रों की कलाकृतियाँ धार्मिक एवं ऐतिहासिक कथा पर आधारित हैं।

- विषय वस्तु –गुरूद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी में पौराणिक विषयों पर आधारित चित्रण है। सिक्ख गुरुओं और गुरु नानक देव, सिक्ख वीर योद्धा, आलंकारिक पैनल, कुछ हिन्दू देवी–देवताओं और राक्षसों आदि को रेखांकित किया गया है।
- रंग विधान– इन भित्ति चित्रों में चित्रकारों ने लाल, पीला, नीला, हरा, काला एवं सफेद रंगों का प्रयोग किया है। यह रंग प्राकृतिक रूप से तैयार किए जाते थे ।

चित्र संख्या 9 – मेहराबों के साथ चित्रों का दृश्य

- रेखाएं – पहाड़ी चित्रकला की भाँति आकृतियों में लयात्मक एवं निश्चित आकार प्रदान करने की प्रक्रिया अपनाई है। रेखाएं कोमल व गत्यात्मकता लिए हुए चित्रित हैं।
- भाषा– प्रत्येक चित्र में गुरुमुखी भाषा अंकित है। कुछ चित्रों में गुरुमुखी भाषा द्वारा कहानियों को वर्णनात्मक रूप में दर्शाया गया है तथा अन्य चित्रों में सूक्ष्म कथा प्रदर्शित है।
- आकृतियाँ – यहाँ अनेक व्यक्ति चित्र प्राप्त होते हैं, जो स्वाभाविक रूप से चित्रित किए हैं। इनमें पर्याप्त सजीवता है तथा प्रभावशाली गुण है। पुरुषों के बड़े समूह को चित्रित किया गया है तथा कलाकारों ने सिक्ख परम्परा के अनुसार व्यक्ति चित्रण को आदर्श स्वरूप में दर्शाने का प्रयास किया है। आकृतियों को मध्यम कद में और नाटी दर्शाया गया है।
- तकनीक एवं प्रभाव – इन भित्ति चित्रों में फ्रेस्को तकनीक का प्रयोग किया गया है। जिसे पंजाब में 'मोहराकाशी' के नाम से जाना जाता है। इस तकनीक का प्रयोग पहाड़ी शैली और राजस्थान शैली से प्रभावित होकर किया गया है।
- प्राकृतिक दृश्य – पशु–पक्षी का अंकन प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया गया है। पहाड़ी वातावरण के अनुकूल ही चित्रों में शान्त प्रवृत्ति एवं वातावरण के दृश्यों का सुंदर संयोजन हैं।

चित्र संख्या 10 – गुरू नानक और अजाली की भेट

- आलंकारिक चित्रण – प्रकृति चित्रण अलंकारिक रूप में प्रदर्शित है, जिनमें फूल–पत्तियों, बेल–बूटों को लाल रंग की पृष्ठभूमि पर हल्के गुलाबी और हरे रंग में चित्रित किया गया है तथा कहीं–कहीं हल्का नीला व आसमानी रंग दृष्टिगत है।

निष्कर्ष

19वी शताब्दी के आरम्भ से पंजाब में चित्रकला का उदय हुआ। इस समय कांगड़ा कलम का पतन हो गया था और महाराजा रणजीत सिंह ने कांगड़ा तथा आस–पास के पहाड़ी राज्यों पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार सिक्ख कला शैली अस्तित्व में आई। सिक्ख शैली, कला और वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली है, जो 18वीं और 19वीं शताब्दी में सिक्ख साम्राज्य के समय विकसित हुई। यह शैली मुख्य रूप से पंजाब क्षेत्र में फली–फूली। सिक्ख कला इतिहास, आस्था और संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति है, जो सिक्ख धर्म की समावेशिता, आध्यात्मिकता एवं समृद्ध विरासत पर प्रकाश डालती है। यह कला सिक्ख समुदाय की भक्ति, रचनात्मकता और कलात्मक परम्पराओं को दर्शाती है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.72

गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब जी, अमृतसर के भित्ति चित्र सौन्दर्यानुभूति से भरपूर हैं। इस गुरूद्वारे की भित्तियों पर धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व प्राकृतिक चित्रण आदि का अंकन किया गया हैं। जिसमें आध्यामिकता, अलंकरण, देवी–देवताओं व सिक्खों के सभी गुरुओं का अध्ययन करके निष्कर्ष स्वरुप में यह कहा जा सकता हैं कि ये चित्र सौन्दर्य, आकर्षण, लावण्य और कलात्मक भव्यता से परिपूर्ण हैं।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, चमन लाल, 1994, पंजाबी इतिहास और संस्कृति, अरुण पब्लिशिंग हाउस, चंडीगढ़
2. अग्निहोत्री, कुलदीप चंद, 2019, लोक चेतना और आध्यात्मिक साधना के वाहक श्री गुरू नानक देव जी,प्रभात प्रकाशन
3. जोशी, दिनेश इन्द्रराज, 2022, पंजाबी साहित्य और संस्कृति, प्रखर गूंज प्रकाशन, दिल्ली
4. द्विवेदी, प्रेमशंकर, 2010, भारतीय भित्ति चित्रकला, कला प्रकाशन
5. गुरू नानक देव जी की भाई बाले वाले जन्म साखी, भाई जवाहर सिंह, कृपाल सिंह एण्ड को॰ पुस्तको वाले बाजार भाई सेवा अमृतसर
6. Aryan, K. C.,1990, Unkown Pahari Wall Painting In North India, Rekha Prakashan
7. Aryan, K. C., 100 Years Survey Of Punjab Painting (1841-1941), Punjabi University Patiala
8. Srivastava, R. P., 1983, Punjab Painting, Abhinav Publication